वर्षा ऋतु में प्रत्येक वर्ष वृहत स्तर पर पौधा रोपण किया जाता है। इस दौरान शासकीय एवं अशासकीय भूमि पर सभी शासकीय विभागों एवं पर्यावरण प्रेमी नागरिकों द्वारा पौधा रोपण का कार्य किया जाता है। पौधा रोपण संबंधित संक्षिप्त जानकारी निम्नानुसार है।

सामान्यतः निम्न प्रकार के पौधे रोपण हेतु लिये जाते है।

फलदार : जामुन, बेल, कैथा, सीताफल, इमली आदि।

छायादार : मौलश्री, करंज, पीपल, बरगद, सीता अशोक आदि।

शोभादार : कचनार, पारस पीपल, सेम्हल, गुलमोहर, झारुल आदि।

1. गड्ढों का आकार –

सागौन एवं मिश्रित प्रजातियों के लिए 30 X 30 X 30 सेमी. तथा बांस एवं फलदार प्रजातियों के लिए 45 X 45 X 45 सेमी. का आकार अच्छा माना जाता है। पौधे की ऊँचाई अधिक होने पर या बड़े आकार के पॉलीबैग होने पर गड्ढे का आकार भी बढ़ाया जा सकता है। ध्यान में रखने योग्य बात यह है की पौधे की जड़ पूर्णतः जमीन के अंदर हो जाए।

2. गड्ढों की मिट्टी बदलना–

सामान्यतः रोपण क्षेत्रों की मिट्टी में कार्बनिक पदार्थ की कमी होती है। अतः गड्ढे की खोदी गयी मिट्टी में से कंकर, पत्थर अलग कर लिये जाये तथा बची हुई मिट्टी में गोबर खाद मिलाकर तैयार मिश्रण तैयार करना चाहिये। इस हेतु दो भाग मिट्टी में एक भाग गोबरखाद मिलाकर मिश्रण तैयार करना चाहिये। उपलब्धता होने पर केचुआ खाद का उपयोग करना चाहिये। यदि रोपण स्थान में मिट्टी उपजाऊ नहीं है तो अन्य स्थान से दोमट या कछार की मिट्टी लाकर रोपण हेतु उपयोग करना चाहिये।

3. रोपण पूर्व तैयारी –

रोपण क्षेत्र में पौधों का परिवहन एक दो दिन पहले कर लेना चाहिये। रोपण में पॉलीथिन के पौधों में सिंचाई नियंत्रित करनी चाहिये जिससे कि पौधे की मिट्टी आंशिक रूप से कड़ी हो जाये तथा पॉलीथिन से पौधा निकालते समय मिट्टी पौधे से अलग ना हो पाये। वृहत स्तर पर पौधा रोपण कार्य को करने के लिये पौधा रोपण से पूर्व मिट्टी के मिश्रण की अधिकतम मात्रा गड्ढे में भर देनी चाहिये तथा केवल पौधे के आकार का स्थान छोड़ देना चाहिये।

4. पौधा रोपण कार्य:–

रोपण के समय पौधे की पॉलीथिन को झटके से नहीं फाडना चाहिये वरन ब्लेड से पॉलीथिन को लंबवत् काटकर चारों तरफ से पॉलीथिन अलग कर लेना चाहिये। ध्यान में रखने योग्य बात यह है कि मिट्टी पौधे से अलग ना हो पाये एवं पौधे की जड़ टूट ना पायें । धीरे से पौधे को सीधा कर गड्ढे के बीच में खड़ा कर उसके चारों तरफ से मिट्टी का मिश्रण भरना चाहिये। मिट्टी का मिश्रण जमीन की सतह से 3 से 4 इंच ऊंचा रखते हुये पैरों से दबा देना चाहिये जिससे कि बारिश का पानी इकट्ठा होकर पौधे की जड़ को ना गला सके।

5. थाला बनाना –

पौधा रोपण के बाद पौधे के चारों तरफ थाला बनाना चाहिये जिससे कि बारिश की नमी पौधे को मिलती रहे। समतल मैदान में पौधे के चारों तरफ गोल थाला बनाना चाहिये एवं ढलान में पौधे से ढलान की तरफ अर्धचंद्राकार थाला बनाना चाहिये।

6. सुरक्षा – पौधा रोपण के पश्चात पौधों की सुरक्षा चराई, वीट एवं बिमारियों से करना चाहिये। आवश्यकता होने पर पौधों की सिंचाई भी करना चाहिये।

7. पॉलीथिन यहां–वहां न फेंकें –

वृक्षारोपण के बाद पॉलीथिन यहां–वहां न फेंकें। कार्य के समय एक धागे को अपने कमर पर बांधना चाहिये तथा जो भी पॉलीथिन निकलते है उन्हें उस धागे में पिरोना चाहिये। वृक्षारोपण के बाद उन पॉलीथिन को निर्धारित स्थान पर डालना चाहिये जहां कचरे का निष्पादन हो सके।

वृक्षारोपण हेतु गड्ढे एवं थाले के आकार

30X30X30 से.मी. का गड्ढा

45X45X45 से.मी. का गड्ढा

अर्धचंद्राकार थाला

गोल थाला

वृक्षारोपण के विभिन्न चरण

1. क्षेत्र की सफाई

2. गड्ढा खोदना

3. मिट्टी से कंकर पत्थर निकालना

4. मिट्टी में खाद मिलाना

5. पौधे की पॉलीथीन काटना

6. पॉलीथीन को पौधे से अलग करना

7. पौधे को लगाना

8. पौधे की सिंचाई एवं थाला बनाना

राज्य वन अनुसंधान संस्थान,
जबलपुर (म.प्र.) – 482008
फोन: 0761–2666529, 2665540
E-mail: sdfri@rediffmail.com,
Website: http//www.mpsfri.org

Godfather # 9425863853, 9425863848

वृहत् स्तर पर पौधा रोपण कैसे करें

राज्य वन अनुसंधान संस्थान
जबलपुर (म.प्र.) – 482008
वर्ष 2018